विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2567, फाल्गुन पूर्णिमा, 25 मार्च, 2024, वर्ष 53, अंक 10

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

अधिगतमिदं बहूहि, अमतं अज्जापि च लभनीयमिदं।
यो योनिसो पयुञ्जति, न च सक्का अघटमानेन॥
– थेरीगाथा- 515

बहुतों ने यह अमृत प्राप्त किया है। और आज भी यह प्राप्त किया जा सकता है। पर प्राप्त वही करता है जो भली प्रकार प्रयत्न करता है। बिना पुरुषार्थ (प्रयत्न) के प्राप्त नहीं होता।

जन्म-शताब्दी का महत्त्व एवं समापन कार्यक्रम

रविवार 4 फरवरी, 2024 (30 जनवरी के उपलक्ष्य में)

आदरणीय भिक्षुसंघ, आचार्यगण, ट्रस्टीज और साधक-साधिकाओ!

आज हम सब पूज्य गुरुजी श्री सत्य नारायण गोयन्काजी की जन्मशताब्दी के अवसर पर एकत्र हुए हैं। यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर है। जिन साधकों ने गुरुजी के सान्निध्य में उनके सीधे मार्गदर्शन में धर्म प्राप्त किया, धर्म सेवा की, आचार्य नियुक्त होकर धर्मदान की विशेष जिम्मेदारी-निर्वहन का अवसर पाया, आरंभ में जिप्सी कैंप से लेकर प्राथमिक स्थाई केंद्र एवं सारे विश्व में स्थाई केंद्रों का निर्माण होते देखा, बच्चों को और जेल में कैदियों को शिविरों में भाग लेते और उनके स्वभाव को बदलते देखा, विपश्यना विशोधन विन्यास के माध्यम से संपूर्ण पालि त्रिपिटक तथा उसकी अर्थ-कथाओं और टीकाओं को बर्मी लिपि से देवनागरी लिपि में लाकर उनका 140 पुस्तकों में प्रकाशन देखा, इगतपुरी में सयाजी ऊ बा खिन विलेज बनते देखा, विश्व विपश्यना पगोडा बनते और उसमें भगवान बुद्ध की शरीर धातु सन्निधानित होते देखा, उन सभी साधकों के लिए यह अवसर बहुत ही विशेष है। पुरानी मीठी स्मृतियों को मन पर उभारने तथा उन क्षणों को पुनः जीवित करने वाला है। आज भी हर साधक गुरुजी के निर्देशानुसार ही साधना करता है। धर्म के सैद्धांतिक पक्ष को भी गुरुजी के प्रवचनों के माध्यम से समझता है। भले ही गुरुजी को साक्षात न देखा हो फिर भी उनके प्रति विशेष आदरभाव, सम्मान और कृतज्ञता का भाव रखता है। गुरुजी के जीवन के करीब 60 वर्ष धर्म को समर्पित थे और भारत में 1969 से जो धर्म का महान कार्य हुआ, जो यात्रा हुई, वह वास्तव में धर्म की यात्रा ही थी। गुरुजी की पारमियां विशेष थीं इसलिए वे धर्म की इस यात्रा के एक योग्य माध्यम बने। वे गुरु-शिष्य परंपरा से प्राप्त इस अमूल्य विद्या का बहुत मैत्री एवं करुणा से दान देते थे। जब भारत से विपश्यना का लोप हो चुका था, तब उन्होंने कल्याणमित्र बनकर हमारे मन में निर्मलता लाने के साथ खुद ने भी शुद्ध धर्म को धारण करने हेतु अथक परिश्रम कर हम सबको भी प्रेरित कर धन्य किया।

ऐसे महा करुणावान गुरु का जन्म-शताब्दी महोत्सव भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन ही प्रदान करता है। अपनी निजी साधना व सामूहिक साधना करते हुए, धर्मकार्य को नई ऊर्जा से भरने, धर्म में पकने का अवसर देता है, अतः यह एक स्मारक वर्ष है।

पूज्य गुरुजी ने सयाजी ऊ बा खिन की जन्म-शताब्दी (6 मार्च, 1999) के अवसर पर जो कहा था, वह उनकी स्वयं की जन्म-शताब्दी पर भी अक्षरशः लागू होता है। उसका कुछ अंश आपके सामने प्रेरणार्थ प्रस्तुत हैं :—

पूज्य गुरुजी का उद्बोधन—

"यह वर्ष अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस वर्ष हमें जिम्मेदारी के साथ जो काम करना है वह सदियों तक आगे की पीढ़ियों के लिए एक अच्छे मार्गदर्शन का काम करे। जो नए आयाम खुले हैं, खुल रहे हैं, इस वर्ष हम उन्हें बहुत सुदृढ़ बनायें। जो पुराने प्रकल्प अब तक चल रहे थे, उनको और अधिक ऊंचाइयां प्रदान करें। यह एक स्मारक वर्ष होना चाहिए। जैसे मैं सदैव कहता रहा, परम पूज्य धर्मपिता सयाजी ऊ बा खिन के सम्मान में सबसे बड़ा काम हम यही कर सकते हैं कि हर व्यक्ति धर्म में खूब पके। यह समझे कि अब मेरी जिम्मेदारी बहुत बढ़ गयी है। मेरा जरा-सा भी उठाया हुआ गलत कदम विपश्यना को बदनाम कर देगा, धर्म को बदनाम कर देगा और मेरा उठाया हुआ प्रत्येक सही कदम विपश्यना को बल प्रदान करेगा, धर्म को बल प्रदान करेगा। यही गुरुदेव को सर्वाधिक सम्मान प्रदान करेगा। इससे बड़ा और कोई सम्मान हो ही नहीं सकता। हम स्वयं धर्म में परिपक्व न हों और समझें कि हम धर्म फैला कर लोगों का कल्याण कर रहे हैं तो ऐसा होता नहीं, हो ही नहीं सकता। एक लंगड़ा आदमी किसी दूसरे लंगड़े की सहायता नहीं कर सकता, सहारा नहीं दे सकता। एक अंधा आदमी किसी दूसरे अंधे का मार्गदर्शन नहीं कर सकता। अपने आप को बलवान बनाना है, और यह किसी पर एहसान करने के लिए नहीं। ऐसा करके हम गुरुदेव पर बड़ा एहसान कर रहे हैं। देखो, हमने आपके माध्यम से या आपके कारण से यह विद्या सीखी और अब देखो उसमें हम कितने उन्नत हो रहे हैं। उन पर एहसान करने की बात नहीं है, अपने कल्याण की बात है, और अपने कल्याण के साथ-साथ लोक कल्याण की बात है। हम हजार स्मारक खड़े कर देंगे, विशाल स्तूप खड़े कर देंगे, हम हजार विपश्यना केंद्र स्थापित कर देंगे, और स्वयं में अहंभाव ही अहंभाव भरते चले जायेंगे—देख मैंने ये किया,

रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

देख मैं ऐसा महान आचार्य हूं, ऐसा धर्मसेवक हूं, ऐसा विपश्यी साधक हूं, साधिका हूं, तो समझो गुरुदेव का सम्मान नहीं हुआ। उनकी जो सबसे बड़ी हार्दिक इच्छा थी, शिव-संकल्प था वह यही कि हमें भारत का ऋण चुकाना है। क्या ऋण चुकाना है? यह अनमोल रत्न जो हमें भारत से प्राप्त हुआ और आज भारत के पास नहीं है, इस कारण भारत की इतनी बड़ी दुर्दशा हो रही है, जाति-पांति, वर्ण-गोत्र, संप्रदाय-संप्रदाय को लेकर लड़ रहे हैं, सारा धर्म छूट गया है।

व्यक्ति की महानता धर्म से आंकी जाती है, जाति, वर्ण, गोत्र, संप्रदाय से नहीं। किसी क्षेत्र में रहने वाला हो, धर्म में पका है तो महान है और धर्म में नहीं पका तो उलझा हुआ है। न जाने किन-किन बातों को धार्मिक होना कहता है। किसी कर्मकांड को, दार्शनिक मान्यता, तीज-त्यौहार, पर्व-उत्सव, व्रत-उपवास को मान कर अपने आपको धार्मिक कहता है और उनका पालन करके समझता है मैं धार्मिक हो गया। धार्मिक क्या होता है? हर संप्रदाय वाले, हर परंपरा वाले अपने-अपने तीज-त्यौहार, पर्व-उत्सव मनायें, कोई दोष की बात नहीं है लेकिन देखना यह है कि मैं धर्म में कितना पका, दुष्कर्मों से कितना दूर हुआ, सत्कर्मों में कितना लगा और अपने मानस को तलस्पर्शी गहराइयों तक निर्मल करने में कितना सफल हुआ। जितना-जितना सफल हुआ, उतना-उतना धार्मिक और जितना-जितना नहीं हुआ उतना-उतना अधार्मिक। यानी, अपने को अधार्मिक स्वीकार करने में लज्जा नहीं आनी चाहिए, बल्कि जिम्मेदारी समझनी चाहिए। देख अभी यह कमी है मुझमें, इसे दूर करना है, नहीं तो ढोंग होगा। ऐसा न करके अपने आप को धोखा देने लगता है। एक-दो विपश्यना के शिविर कर लिया तो समझता है धर्म का सही अर्थ भी समझ गया। फिर भी प्रगति नहीं कर रहा है तो अपने आप को धोखा देता है कि ये तो कर रहा हूं न, यह नहीं कर पाया तो क्या हुआ? वो तो कर रहा हूं न, लोगों को धोखा देना चाहता है। अपने आप को धोखा देना चाहता है। प्रकृति को कैसे धोखा देगा? धार्मिक नहीं हो रहा है, तो अपना वर्तमान बिगाड़ रहा है, अपना भविष्य बिगाड़ रहा है, प्रकृति लिहाज नहीं करेगी, पक्षपात नहीं करेगी। एक ही बात! मुझे अपने कर्म सुधारने हैं।

जब तक मेरे कर्म दूषित हैं तब तक मैं धर्म से बहुत दूर हूं और कर्म मेरे तब तक दूषित ही रहेंगे जब तक कि मैं स्वयं अपने मन को निर्मल न कर लूं। मन मैला रहेगा तो सत्कर्म होगा नहीं, दुष्कर्म ही होंगे। विपश्यना इसीलिए करते हैं कि मन के ऊपरी-ऊपरी हिस्से के साथ खिलवाड़ करके नहीं रह गए। हमने तो उसकी तलस्पर्शी गहराइयों में जाकर उसके स्वभाव को पलटने का काम किया है। एकाध शिविर में कोई आदमी पूर्णतया सफल हो जाय, ऐसा नहीं होता। पीछे की कोई बहुत बड़ी पारमी हो तो हो भी जाय, अन्यथा यह मान कर चलना है कि समय लगता है। लक्ष्य हमारा स्पष्ट है कि हमें अपने चित्त को ऊपर-ऊपर से तो सुधारना ही है, मुख्यतः जड़ों तक सुधारना है। और जड़ों तक विपश्यना से कैसे सुधरता है? यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए। नहीं समझ में आए तो अपने मार्गदर्शक से मिलें। एक बार मिलें, दस बार मिलें, पर समझें कि यह विद्या कैसे हमें मन की गहराइयों तक ले जाती है और वहां हमारे स्वभाव को पलटने का काम करती है। तो एकहि साधे सब सधे। और सारी बातें एक ओर, मुख्य बात मन की तलस्पर्शी गहराइयों तक सुधारने का जो काम मैंने शुरू किया, उसमें कितनी प्रगति हुई। प्रगति हुई या नहीं हुई, वह मेरा जीवन-व्यवहार बोलेगा। अब तक जिस तरह का व्यवहार मैं लोगों के साथ करता था, जिन परिस्थितियों में करता था, अब उसी तरह के लोग, उसी तरह की परिस्थितियां आयीं, लेकिन देख! अब मेरे व्यवहार में अंतर आ रहा है, सुधार आ रहा है।

बस! इसी मापदंड से मापेंगे अन्यथा यह भी धोखा हो सकता है कि बड़ा निर्मल हो रहा हूं, देखो! पहले तो बड़ी स्थूल संवेदनायें आतीं थीं, अब तो सूक्ष्म संवेदनायें आने लगीं, धाराप्रवाह आने लगा। अरे! अब मेरे संत होने में क्या कमी रह गई? तेरे संत होने का यह मापदंड नहीं है कि तुझे कैसी संवेदनायें आ रही है? मापदंड यह है कि तुझमें समता कितनी आ रही है और समता आ रही है या नहीं, इसका मापदंड यह है कि वह समता जीवन में उतर रही है कि नहीं। यह छोटी-सी बात, लेकिन बहुत बड़ी बात है। छोटी इस माने में कि केवल इतनी ही बात समझें कि मुझे अपने चित्त को जड़ों तक सुधारना है। जड़ों तक सुधरा कि नहीं— इसे समता से मापना है। समता बढ़ी कि नहीं? उसको अपनी दैनिक जीवनचर्या से मापना है। बस! इतनी-सी बात धर्म की है। इसके अतिरिक्त जो कुछ करते हैं, करते रहें। आखिर समाज में रहना है तो जो आदमी जिस समाज में रहता है, जिस परंपरा में रहता है, परिवार में रहता है वे लोग कोई पर्व-त्यौहार मनाते हैं और पारस्परिक सौमनस्यता के लिए लोगों के साथ हमारे मधुर संबंध हैं तो हम उनके साथ रहें, जिसमें समाज के लोगों का आमोद-प्रमोद होता है, थोड़ी संतुष्टि होती है, अच्छी बात है लेकिन यह सब करने या मान लेने से हम धार्मिक हो गए, इस जंजाल में कभी नहीं पड़ जाना।

धार्मिक होने का यह मापदंड नहीं है कि हमने यह कर्मकांड कर दिया, यह पर्व-उत्सव मना लिया, यह तीज-त्यौहार मना लिया, यह व्रत-उपवास कर लिया या ऐसी वेशभूषा धारण कर लिया। धार्मिक होने का इनसे कोई लेनदेन नहीं। वह सब करते हुए भी धार्मिक बन सकते हो। पर वस्तुतः धार्मिक तो वही कि जीवन में धर्म उतर रहा है कि नहीं, बस! एक ही मापदंड है। जितनी जल्दी कोई इस बात को समझ लेता है वह अपने मनुष्य जीवन को सार्थक कर लेता है। और जब तक उलझा रहता है तब तक अपने को धोखे में रखता है, औरों को धोखे में रखता है। अपनी हानि करता है, औरों की भी हानि करने लगता है।

पूज्य गुरुदेव का जो लक्ष्य था कि हमें भारत का अनमोल रत्न भारत को लौटाना है तो कोई संप्रदाय स्थापित करने के लिए नहीं। वे वहां बैठे देख रहे थे कि भारत में इतने संप्रदाय हैं और ये कैसे झगड़ रहे हैं! धर्म के नाम पर कैसा खून-खराबा कर रहे हैं! इन लोगों में धर्म का नामोनिशान नहीं है। उन्हें तो धर्म का रत्न लौटाना है, न कि कोई संप्रदाय। वे बार-बार इस बात को कहते थे और वहां के बुद्ध भक्तों को भी कहते थे कि देख भाई! मेरे लिए तो जो व्यक्ति शील, समाधि, प्रज्ञा का पालन करता है और इस पथ पर प्रगति करता है वही सही माने में बुद्ध का अनुयायी है, धर्म का अनुयायी है। और जो आदमी अपने को भले बौद्ध कहे लेकिन न शील पालन करता है, न समाधि का अभ्यास करता है, न प्रज्ञा बढ़ाने या जगाने का काम करता है, वह अभागा है, बड़ा अभागा है। केवल नाम रख कर अपने आप को धोखे में रखता है, वह बुद्ध का अनुयायी नहीं है। भगवान बुद्ध ने जो इतनी बड़ी विद्या दी उसके लाभ से वंचित रह गया। केवल इसी धोखे में कि मैं अपने आप को बौद्ध कहता हूं, औरों से कितना ऊंचा हूं। अरे! नहीं ऊंचे हो भाई। कोई अपने को ब्राह्मण कह कर ऊंचा नहीं हो सकता। कोई अपने को बौद्ध कहकर ऊंचा नहीं हो सकता। कोई अपने को...। कर्मों के अनुसार होगा भाई! मेरे कर्म कैसे हैं? कर्म सुधर रहे हैं तो बहुत ठीक, उसमें गर्व करने की बात नहीं, मैं अपनी जिम्मेदारी पूरा कर रहा हूं। मैं अपने मनुष्य जीवन को सार्थक करने का काम कर रहा हूं, अहंकार जगाने के लिए नहीं।

धर्म की इतनी-सी बात समझ में आ जाय तो बस! मनुष्य का जीवन मिला है और इस जीवन में शुद्ध धर्म समझ में आया है, इसके प्रति श्रद्धा जगी है और श्रद्धा जगने के कारण मैं इस रास्ते पर चल रहा हूं, यानी, शील, समाधि, प्रज्ञा के रास्ते चल रहा हूं तो किसी पर एहसान नहीं कर रहा। मेरा यह नाम रहे कि वह, कुछ फर्क नहीं पड़ता। लेकिन मैं उपकार

मानता हूं, उस परंपरा का जिसने इसे संभाल के रखा। मैं उपकार मानता हूं उस महान गृही संत का कि जिसमें इतना बड़ा धर्मसंवेग जागा कि यह विद्या भारत जाय। पूर्ण विश्वास था उनको कि अब समय आ गया है, भारत के जो समझदार लोग हैं वे एकदम स्वीकार करेंगे और फिर सारे विश्व में फैलेगी विपश्यना। उनका स्वप्न पूरा होने का लक्षण तो सामने दिख रहा है लेकिन हम केवल किसी चमत्कार पर छोड़ दें कि उनका स्वप्न है, देखो पूरा होने लगा, हम क्या करें इसमें? अपने आप ही पूरा होगा, तो धर्म नहीं होगा। इसके लिए काम करना होगा, बहुत काम करना होगा।

जब यहां से जायँ तो दृढ़ संकल्प लेकर जायँ कि इस वर्ष हम अपने आप को धर्म में पकायेंगे। हमारी जिम्मेदारी है, अपने आप को पकायेंगे और इसलिए पकायेंगे कि इसमें अपना कल्याण है। और साथ-साथ उस संत के प्रति जो कृतज्ञता है उसका ज्ञापन है। अपने आप को पकायेंगे और इसके साथ-साथ अधिक से अधिक लोगों में यह विद्या कैसे फैले, उसमें मैं क्या योगदान दे सकता हूं? अधिक से अधिक लोगों को यह विद्या मिले, इसमें मैं क्या कर सकता हूं? जिसमें जितनी योग्यता है, सामर्थ्य है वह अपनी सारी योग्यता, सारा सामर्थ्य इसी में लगाएगा कि मुझे ऋण चुकाना है। जैसे उस संत पुरुष को लगा कि हमें भारत का ऋण चुकाना है वैसे हमें भी लगना चाहिए कि हमें हमारे पड़ोसी देश का ऋण चुकाना है। हमें उस महान संत का ऋण चुकाना है, जिसकी वजह से यह कल्याणकारी विद्या हमें मिली। इस जिम्मेदारी को समझते हुए जो भी आयोजन होते हैं, इस विशाल स्तूप का आयोजन हो, या कहीं कोई विराट सम्मेलन हो रहा है पश्चिम में, वैसे ही यहां भी कहीं हो या और किसी प्रकार का साहित्य निकल रहा है, जिससे लोगों तक यह जानकारी पहुँचे कि एक ऐसी विधा है जिससे तुम अपने दुखों के बाहर निकल सकते हो। तुम्हारे दुखों का और कोई कारण नहीं। ऊपरी-ऊपरी हजार कारण दिखेंगे, पर सही कारण हमारे भीतर के विकार हैं। जब तक तुम्हारे भीतर विकार जाग रहे हो, तुम दुःखी व्यक्ति हो और दुःखी ही रहोगे। यह एक ऐसी विद्या है जो हमें विकारों से मुक्त करती है। एक तो ऊपर-ऊपर से अपने विकारों को मुक्त करता है जैसे कि हमने अपने मन को भुलावा दे दिया, कहीं किसी पलायन में लगा दिया, किसी आमोद-प्रमोद में लगा दिया। देखो! अब हमारा मन शांत है इत्यादि-इत्यादि। लेकिन यह विद्या तो जड़ों तक स्वभाव पलटती है, यह बात लोगों तक पहुँचे। बहुत लोग ऐसे हैं जो चाहते हैं कि हम कैसे विकारों से मुक्त हों? बहुत क्रोधी व्यक्ति जानता है कि अरे! क्रोध करता हूं तो अपने को व्याकुल बनाता हूं, औरों को भी व्याकुल बनाता हूं। पर क्या करूं, इस क्रोध से निकल नहीं सकता। एक आसक्त आदमी जानता है कि इस आसक्ति के कारण मैं कितना दुखियारा हूं, पर निकल नहीं सकता। एक व्यसन में जुड़ा हुआ व्यक्ति जानता है कि व्यसन से बाहर निकलना है पर कैसे निकले? निकल नहीं सकता। यह विद्या है भाई! पर पता ही नहीं है न, कितने लोगों को पता है?

पिछले 30 वर्षों में जो काम हुआ उससे मन को बड़ी प्रसन्नता होती है कि काम शुरू तो हुआ। लेकिन साथ-साथ यह भी सत्य है कि तीन चार अरब वाली इस पृथ्वी पर दो-चार लाख लोगों ने यदि विपश्यना सीख भी ली तो समुद्र में पानी की बूंद की तरह बात हुई। बहुत काम करना है, बहुत काम करना है। तो अगले वर्ष का प्रयोग हम इस तरह से करेंगे कि अधिक से अधिक लोगों को इसकी जानकारी हो। और अपने सामर्थ्य के अनुसार हम अधिक से अधिक लोगों को यह विद्या सीखने का और जो सीखे हुए हैं उनको इस विधा में पकने की सारी सहूलियतें—जितनी कर सकते हैं उतनी करेंगे। लोगों तक सूचनायें ही नहीं जायेंगी तो बेचारे कैसे आयेंगे इस पथ पर। और इस पथ पर आए लेकिन आगे बढ़ाने के साधन नहीं हैं तो भी बात नहीं बनी। तो एक तो सूचना जानी चाहिए, दूसरी ओर उनमें प्रेरणा जागे कि अच्छा पथ है, हमें करना है। हमें करके देखना है और करके देख लिया तो अब हम उनको कैसे प्रोत्साहन दें? कैसे वे धर्मपथ पर आगे बढ़ें? एक तो अपने आप को इसमें आगे बढ़ायें तो वह आदर्श होगा। वे देखेंगे कि यह व्यक्ति इस रास्ते चलकर कितना बदल गया है तो उनको प्रेरणा मिलेगी, प्रोत्साहन मिलेगा।

खंडाला में पादरियों का एक शिविर था। शिविर के अंत में एक भाई ने मुझे बताया कि हमारे यहां एक कहावत है- शायद मराठी भाषा में होगी—"कहता है कि जो आदमी अंगुली दिखाता है कि उस ओर जाओ बहुत अच्छा रास्ता है तो लोग उस रास्ते की ओर बाद में देखेंगे, पहले उसकी अंगुली की ओर देखेंगे।" उसकी अंगुली मैली है, उसमें खून लगा है। अरे! यह क्या रास्ता बता रहा है? तो पहले तुम्हें देखेंगे, तुम्हारा जीवन कैसा है? तुम विपश्यना की हजार प्रशंसा करोगे, लेकिन तुम्हारा जीवन नहीं सुधरा तो क्या लाभ? हमारा जीवन नहीं सुधरा और हम लोगों से कहें बहुत अच्छा है, तुम्हें करना चाहिए, ये मिलेगा वो मिलेगा—सारी निकम्मी बातें हो जायेंगी। तो आधार हो धर्म में पुष्ट करने का, फिर लक्ष्य हो कि अधिक से अधिक लोगों को यह रास्ता मिले, इसकी सूचना देकर उनको इस रास्ते पर चलने की सुविधायें प्रदान करने में सहयोगी बन जाने का। उनको इस रास्ते पर पुष्ट कर देने में सहयोगी बन जाने का। बस! इतनी सी बात याद रखेंगे। दृढ़ संकल्प रखेंगे तो खूब कल्याण होगा। अपना तो कल्याण होगा ही, साथ-साथ बहुत जनों का कल्याण होगा। सभी दुखियारों का मंगल हो, सबका कल्याण हो!..."

क्रमशः अगले अंक में...

oooooooooooooooooooo

ऑनलाइन पालि-हिंदी सर्टिफिकेट कोर्स-2024

प्रवेश-प्रक्रिया 1 मार्च से 31 मार्च 2024 तक चलेगी।

कोर्स-डिटेल्स और आवेदन पत्र;- विभिन्न व्हाट्सएप समूहों एवम् लिंक पर- (नीचे दिए गए), 1 मार्च 2024 से, उपलब्ध हैं।

https://palilearning.vridhamma.org/

कृपया अपनी पूछताछ टेलिग्राम एप नंबर +91 78219 95737 पर संदेश भेजें। Email – enquiry@vridhamma.org

oooooooooooooooooooo

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री विनोद वतनी, (केंद्र आ., धम्म अजन्ता औरंगाबाद,) मराठवाडा क्षेत्र के लिए समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व
वरिष्ठ स. आचार्य

1. श्रीमती संतोष शर्मा, औरंगाबाद
2. श्रीमती वंदना जोंधले, नांदेड

नव नियुक्तियां
सहायक आचार्य

1. श्री प्रसाद सबनिस, पुणे
2. श्री सुरेश पाटील, जलगांव
3. श्री पुरुषोत्तम दुधे, गडचिरोली
4. कु. शोवा महर्जन, नेपाल
5. कु. सुधा जोशी, नेपाल
6. श्री जय कुमार महर्जन, नेपाल
7. श्री कुंदन दास श्रेष्ठ, नेपाल
8. श्री दीपेश गुरुंग, नेपाल
9. श्री दीप अधिकारी, नेपाल
10. श्रीमती बिमला शाक्य, नेपाल
11. Ms. Cheng Hoon Low, Malaysia
12. Mr. Kory Goldberg, Canada
13. Mrs. Michelle Decary, Canada
14. Mr. Sona Luy, Cambodia

क्षेत्रीय संयोजक बाल-शिविर

1. श्रीमती शीला शर्मा, क्षेत्रीय संयोजक बाल शिविर के रूप में सेवा देंगे. क्षेत्र: उत्तर प्रदेश पूर्व

बालशिविर शिक्षक

1. श्री भूषण उगाले, नासिक
2. श्री सुभाष राउत, नासिक
3. श्रीमती तेजश्री गायकवाड़, नासिक
4. श्रीमती प्रगति थोरात, डोंबिवली
5. श्री कश्यप जोशी, भरूच, गुजरात
6. श्री जसवंत कुमावत, झुंझुनू
7. श्री अश्वजीत थोरात, डोंबिवली
8. कु. श्वेता चोटिया, बंगलुरु
9. Mrs Park Pil Yeun, Rep Korea
10. Ms. Hyowon Jeon, South Korea
11. Mr. Juen myeong-soo, Repulic of Korea
12. Ms. kim young moon, South Korea

दोहे धर्म के

शुद्ध धरम फिर जगत में, पूज्य प्रतिष्ठित होय।
जन-जन का होवे भला, जन-जन मंगल होय॥

इस सेवा के पुण्य से, भला सभी का होय!
सबके मन जागे धरम, सबका मंगल होय!!

ज्योत जगे फिर धर्म की, दूर होय अँधियार।
बहुजन का हित-सुख सधे, हो बहुजन उपकार॥

धर्मभूमि पर धर्म की, गंग प्रवाहित होय।
इस मुरझाए देश में, फिर हरियाली होय॥

दूहा धरम रा

सदा रवै सद्भावना, द्वेस सदा ही दूर।
बौद्ध बणूं या न बणूं, मानव बणूं जरूर॥

मंगळ मैत्री भाव स्यूं, पुलकित रवै सरीर।
करुणा उमड़ै चित्त मंह, देख परायी पीर॥

मानव रो जीवन मिल्यो, धरम मिल्यो अनमोल।
निज हित, पर हित, सरब हित, लगी रवै या खोळ॥

मन भर ज्यावै मोद स्यूं, सुख भाई रो देख।
ईर्स्या रै दुरभाव री, रंच जगै ना रेख॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877, मोबा. 09423187301, *Email: morolium_jal@yahoo.co.in*
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2567, फाल्गुन पूर्णिमा, 25 मार्च, 2024; वर्ष 53, अंक 10

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 06 MARCH, 2024, DATE OF PUBLICATION: 25 MARCH, 2024

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 243553, 244076,
244086, 244144, 244440
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org